



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण

## EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4

PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 95 ]

नई दिल्ली, बुधवार, जुलाई 19, 2000/आषाढ़ 28, 1922

No. 95]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JULY 19, 2000/ASADHA 28, 1922

बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण

अधिसूचना

नई दिल्ली, 14 जुलाई, 2000

बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (नियत विमांकक) विनियम, 2000

फा. सं. बी.वि.वि.प्रा./वि/7/2000.—बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण, बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) की धारा 114क की उपधारा (2) के खंड (यद्य) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, बीमा सलाहकार समिति के परामर्श से निम्नलिखित विनियम बनाता है, अर्थात्:-

1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ - (1) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (नियत विमांकक) विनियम, 2000 है।

(2) वे, उनके राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषा- (1) इन विनियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,-

(क) "अधिनियम" से बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) अभिप्रेत है;

(ख) भारतीय चापांकक सोसायटी" से सोसायटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1860 (1860 का 21) के अधीन रजिस्ट्रीकृत भारतीय बीमांकक सोसायटी अभिप्रेत है;

(ग) "नियत विमांकक" से नीचे विनियम 3 में उल्लिखित कोई बीमांकक अभिप्रेत है;

(घ) "प्राधिकरण" से बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) की धारा 3 की उपधारा (1) के अधीन स्थापित बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अभिप्रेत है;

(उ) "वृत्तिक मानक" से भारतीय बीमांकक सोसायटी द्वारा प्राधिकरण की सहमति से अपने सदस्यों को मार्गदर्शक टिप्पण जारी करके विनिर्दिष्ट किया गया वृत्तिक का मानक अभिप्रेत है।

(2) इन में प्रयुक्त सभी शब्दों और पदों का क्रमशः वही अर्थ होगा, जो उनका बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) या बीमा विनियमक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) में उनका परिभाषित है या उनमें है;

3. नियत बीमांकक की नियुक्ति के लिए प्रक्रिया.—(1) भारत में बीमा कारबार करने के लिए रजिस्ट्रीकूत बीमाकर्ता उपविनियम (2) के अधीन रहते हुए, एक बीमांकक नियुक्त करेगा, जिसे अधिनियम के प्रयोजन के लिए “नियत बीमांकक” कहा जाएगा।

(2) कोई व्यक्ति किसी बीमाकर्ता के लिए नियत बीमांकक के रूप में नियुक्त किए जाने के लिए पात्र होगा, यदि वह—

(i) भारत में सामान्यतः निवासी है;

(ii) भारतीय बीमांकक सोसायटी का / की फैले सदस्य है;

(iii) जीवन बीमा कारबार की दशा में जीवन बीमाकर्ता का/की कर्मधारी है;

(iv) साधारण बीमा कारबार की दशा में बीमाकर्ता या प्रामर्शदाता बीमांकक का/की कर्मधारी है;

(v) वह कोई ऐसा व्यक्ति है, जिसके विरुद्ध भारतीय बीमांकक सोसायटी या किसी अन्य बीमांकिक व्यवसायिक निकाय द्वारा कोई अनुशासनिक कार्रवाई लम्बित नहीं है;

(vi) किसी अन्य बीमाकर्ता का नियत बीमांकक नहीं है;

(vii) कोई ऐसा व्यक्ति है, जिसके पास भारतीय बीमांकक सोसायटी द्वारा दिया गया व्यवसाय का प्रमाणपत्र है; और

(viii) सत्तर वर्ष की आयु से ऊपर नहीं है।

(3) कोई भी बीमाकर्ता प्ररूप बी वि वि प्रा-कक्क-1 में आवेदन प्रस्तुत करके नियत बीमांकक की नियुक्ति के लिए प्राधिकरण के अनुमोदन की मांग करेगा।

(4) प्राधिकरण, आवेदन की प्राप्ति की तारीख से तीस दिन के भीतर या तो उसे स्वीकार करेगा या नामंजूर करेगा: परन्तु आवेदन के नामंजूर करने के पूर्व प्राधिकरण बीमाकर्ता को सुनवाई का अवसर देगा।

(5) यदि बीमाकर्ता को, प्राधिकरण द्वारा ऐसे आवेदन की प्राप्ति के तीस दिन के भीतर अनुमोदन प्राप्त नहीं होता है तो बीमाकर्ता यह समझेगा कि प्राधिकरण द्वारा अनुमोदन दे दिया गया है।

(6) कोई ऐसा बीमाकर्ता, जो उपविनियम (2) के अनुसरण में नियत बीमांकक को नियुक्त करने में असमर्थ है, उपविनियम (2) में उल्लिखित एक या अधिक शर्तों से छूट के लिए लिखित रूप में प्राधिकरण को आवेदन करेगा।

(7) प्राधिकरण, उपविनियम (6) में निर्दिष्ट आवेदन की प्राप्ति पर, ऐसे आवेदन की प्राप्ति के तीस दिन के भीतर बीमाकर्ता को अपने विनिश्चय की संसूचना देगा।

(8) नियत बीमांकक की नियुक्ति, प्राधिकरण द्वारा अनुमोदन करने की तारीख से प्रभावी होगी।

4. आवेदन को नामंजूर करने का प्रभाव— बीमाकर्ता, विनियम 3 के अधीन निर्दिष्ट आवेदन की नामंजूरी के चार सप्ताह के भीतर इन विनियमों के प्रयोजन के लिए किसी नियत बीमांकक के रूप में विनियम 3 के अधीन उसके द्वारा नामंजूर किए गए से भिन्न किसी व्यक्ति की नियुक्ति के लिए प्राधिकरण को आवेदन करेगा।

5. जीवन बीमाकर्ता द्वारा किसी नियत बीमांकक के बिना बीमा कारबार न किया जाना।— कोई जीवन बीमाकर्ता, किसी नियत बीमांकक के बिना बीमा कारबार नहीं करेगा।

6. नियत बीमांकक की नियुक्ति की समाप्ति- (1) कोई भी नियत बीमांकक, उस रूप में नहीं रहेगा, यदि उसे निम्नलिखित आधारों पर प्राधिकरण द्वारा अनुमोदन वापस लेने की सूचना दे दी गई है कि-

(क) वह विनियम 3 के उपर्यन्ति (2) के अनुसार पात्र नहीं है; या

(ख) वह प्राधिकरण की राय में इन विनियमों के अधीन नियत बीमांकक के कर्तव्यों और दायित्वों का पर्याप्ततः और समुचित रूप में पालन करने में असफल रहा/रही है।

(2) प्राधिकरण नियत बीमांकक को सुनवाई का उचित अवसर देगा, यदि उसे प्राधिकरण ने अनुमोदन के वापस लिए जाने की सूचना दी है।

(3) यदि कोई व्यक्ति उपर्यन्ति (1) में उल्लिखित आधारों से भिन्न आधारों पर किसी बीमाकर्ता का नियत बीमांकक नहीं रहता जाता है तो बीमाकर्ता और नियत बीमांकक ऐसी समाप्ति के पद्धति दिन के भीतर उसके कारण प्राधिकरण को सूचित करेगा।

7. नियत बीमांकक की शक्तियाँ- (1) नियत बीमांकक की सभी जानकारी या बीमाकर्ता के कब्जे या नियंत्रणाधीन दस्तावेजों तक पहुंच होगी यदि ऐसी पहुंच नियत बीमांकक के कृत्यों और कर्तव्यों के उचित और प्रभाष्य अनुपालन के लिए आवश्यक है।

(2) नियत बीमांकक, बीमाकर्ता के किसी अधिकारी या कर्मचारी से इस विनियम के उपर्यन्ति (1) के प्रयोजन के लिए कोई भी जानकारी मांग सकेगा।

(3) नियत बीमांकक निम्नलिखित के लिए हकदार होगा:-

(क) प्रबंध-तंत्र के, जिसके अन्तर्गत बीमाकर्ता के निदेशक भी हैं, सभी अधिवेशनों में भाग लेना;

(ख) ऐसे अधिवेशन में, किसी ऐसे विषय पर बोलना और विचार-विमर्श करना, जो -

(i) निदेशकों को दी गई बीमांकिक सलाह से संबंधित है;

(ii) बीमाकर्ता की ऋणशोधक क्षमता को प्रभावित करे;

(iii) पालिसीधारियों की समुचित प्रत्याशाओं को पूरा करने के लिए बीमाकर्ता की योग्यता को प्रभावित करे; या

(ग) (i) बीमाकर्ता के शेयरधारकों या पालिसीधारियों के किसी अधिवेशन में भाग लेना; या

(ii) बीमाकर्ता के सदस्यों के किसी ऐसे अधिवेशन में भाग लेना, जिसमें बीमाकर्ता के वार्षिक लेखाओं या वित्तीय विवरणों पर विचार किया जाना हो या जिसमें नियत बीमांकक के कर्तव्यों से संबंधित किसी विषय पर विचार-विमर्श किया जाना हो।

8. कर्तव्य और दायित्व - विशिष्टतया और पूर्वगामी विषयों की व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव ढाले बिना, और बीमा उद्योग और पालिसीधारियों के हित में, बीमाकर्ता के नियत बीमांकक के कर्तव्यों और दायित्वों में निम्नलिखित सम्मिलित होंगे,-

(क) बीमाकर्ता के प्रबंध-तंत्र को बीमांकिक सलाह देना, विशेष रूप से उत्पाद डिजाइन और कीमत नियतन, बीमा संविदा के लिए शब्द चयन, विनिधानों और पुनर्बीमा के क्षेत्रों में;

(ख) सभी समयों पर बीमाकर्ता की ऋणशोधन क्षमता सुनिश्चित करना;

(ग) उन आस्तियों और दायित्वों के प्रमाणन के बारे में अधिनियम की धारा 64F के उपर्याखों का अनुपालन करना, जो उक्त धारा के अधीन अपेक्षित रीति में मूल्यांकित की गई है;

(घ) अधिनियम की धारा 64फक्क के अधान अपेक्षित रात में अपेक्षित ऋणशोधन क्षमता के अन्तर का बनाए रखने के बारे में उक्त धारा के उपबंधों का अनुपालन करना;

(ङ) बीमाकर्ता के प्रबंध-तंत्र का किसी ऐसे विषय की ओर ध्यान आकृष्ट करना, जिस पर उसका विचार है कि निम्नलिखित से बचाने के लिए बीमाकर्ता द्वारा कार्रवाई की जानी अपेक्षित है-

(i) अधिनियम के किसी उल्लंघन; या

(ii) पालिसीधारियों के हितों के लिए प्रतिकूल प्रभाव।

(च) प्राधिकरण के निदेशों का समय-समय पर अनुपालन करना;

(छ) यदि बीमाकर्ता जीवन बीमा कारबाह घला रहा है, तो-

(i) बीमांकिक रिपोर्ट और सार तथा अधिनियम की धारा 13 के अधीन अपेक्षित अन्य विवरणियों को प्रमाणित करना;

(ii) प्राधिकरण द्वारा अपेक्षित अतिरिक्त जानकारी के बारे में अधिनियम की धारा 21 के उपबंधों का अनुपालन करना;

(iii) प्रीमियम के आधारों के बारों में अधिनियम की धारा 40ख के उपबंधों का अनुपालन करना;

(iv) उन पालिसीधारियों को, जिनकी पालिसियां मृत्यु के कारण या अन्यथा अतः मूल्यांकन अवधि के दौरान संदाय के लिए परिपक्व हो गई हैं, जीवन बीमाकर्ता द्वारा संदेय अंतरिम बोनस या बोनस की सिफारिश के बारे में अधिनियम की धारा 112 के उपबंधों का अनुपालन करना;

(v) यह सुनिश्चित करना कि सभी अपेक्षित अभिलेख बीमाकर्ता के दायित्वों और आस्तियों का बीमांकिक मूल्यांकन करने के प्रयोजन के लिए उसे उपलब्ध कराए गए हैं;

(vi) यह सुनिश्चित करना कि बीमा उत्पादों की प्रीमियम दरें उचित हैं;

(vii) यह प्रमाणित करना कि गणितीय आरक्षितियां भारतीय बीमांकिक सोसायटी द्वारा जारी किए गए मार्गदर्शक टिप्पणी और प्राधिकरण द्वारा दिए गए किन्हीं निदेशों को ध्यान में रखते हुए अवधारित की गई हैं;

(viii) यह सुनिश्चित करना कि पालिसीधारियों की उचित प्रत्याशाओं पर, उन भाग लेने वाले पालिसीधारियों के, जो अतिशेष के हिस्से के लिए हकदार हैं, दायित्वों के मूल्यांकन और अतिशेष के वितरण के विषय में विचार किया गया है;

(ix) बीमा उद्योग और पालिसीधारियों के हित में बीमांकिक सलाह प्रस्तुत करना।

(ज) साधारण बीमा कारबाह करने वाले बीमाकर्ता की दशा में यह सुनिश्चित करना कि-

(i) उन संविदाओं के संबंध में दरें उचित हैं, जो बीमाकर्ता की इन-हाउस टैरिफ द्वारा शासित होती हैं,

(ii) उपगत दायित्व अवधारित करने में बीमांकिक सिद्धांतों का आरक्षितियों के आकलन में उपयोग किया गया है किन्तु शब्द रिपोर्ट नहीं किए गए हैं (आई बी एन आर) और अन्य आरक्षितियां, जहाँ बीमांकिक सलाह प्राधिकरण द्वारा मांगी गई हैं;

(झ) प्राधिकरण को समुचित समय के भीतर अपनी राय लिखित रूप में सूचित करना कि क्या,-

(i) बीमाकर्ता ने अधिनियम या किन्हीं अन्य अधिनियमों का उल्लंघन किया है;

(ii) उल्लंघन ऐसी प्रकृति का है कि इससे बीमाकर्ता द्वारा जारी की गई पालिसियों के स्वामियों और हिताधिकारियों के हित महत्वपूर्ण रूप से प्रभावी होंगे।

(iii) बीमाकर्ता के निदेशक ऐसी कार्रवाई करने में असफल रहे हैं, जो इस विनियम के अधीन उनके कर्तव्यों और दायित्वों का प्रयोग करने के लिए समुचित रूप से आवश्यक हैं; या

(iv) बीमाकर्ता का कोई अधिकारी या कर्मचारी ऐसे आचरण में लगा हुआ है जो उसे इस विनियम के अधीन अपने कर्तव्यों और दायित्वों का प्रयोग करने से निवारित करने वाला समझा गया है।

9. नियत बीमांकक का पूर्ण विशेषाधिकार- (1) नियत बीमांकक को, नियत बीमांकक के रूप में अपने कृत्यों के पालन के प्रयोजन के लिए एक कथन, मौखिक या लिखित, करने का विशेषाधिकार होगा। यह किन्हीं अन्य विनियमों के अधीन नियत बीमांकक को प्रदत्त किसी अन्य विशेषाधिकार के अतिरिक्त है।

(2) नियत बीमांकक की नियुक्ति पत्र के किसी ऐसे उपबंध का, जो इन विनियमों के अधीन उसके कर्तव्यों, दायित्वों और विशेषाधिकारों को निर्धारित या निवारित करता है, कोई प्रभाव नहीं होगा।

10. पुनर्बीमा कारबार को लागू होना-ये विनियम उन पुनर्बीमाकर्ताओं को लागू होंगे, जो भारत में पुनर्बीमा कारबार कर रहे हैं।

प्रारूप बी० कि० प्रा० -कक-1

#### नियत बीमांकक की विशिष्टियाँ

1. बीमाकर्ता का नाम:
2. बीमांकक का नाम:
3. टेलीफोन नंबर सहित आवासीय पता; पिछले पांच वर्षों के आवासीय पते प्रस्तुत करने होंगे,
4. टेलीफोन नंबर सहित कार्यालय का पता:
5. नियुक्ति की तारीख:
6. जन्म की तारीख और स्थान:
7. वार्षिक परिश्रमिक तथा सीमान्त प्रसुविधाएँ:
8. भारतीय बीमा कंपनी में (जिसके लिए आवेदक नियत बीमांकक है) शेयरधारण (शेयरधारण में प्रतिशत) और संप्रवर्तक की कंपनियों में भी, यदि कोई हो:
9. वृत्तिक अर्हताएँ:
10. कार्य करने का अनुभव (भारत में या अन्य स्थान में नियत बीमांकक के रूप में पूर्व अनुभव की विशिष्टियाँ भी हैं):
11. उपलब्धियाँ और वर्तमान में या पूर्व में धारित विशेष पद:
12. किन्हीं ऐसी अन्य फर्मों या कंपनियों के नाम, निगमन के देश में पते और मुख्य क्रियाकलाप, जिनमें आवेदक निदेशक, भागीदार, स्वत्वधारी या कर्मचारी था:
13. भारत में या अन्य स्थान में अपराधों के लिए किसी आपराधिक दोषसिद्धि की विशिष्टियाँ:
14. क्या आवेदक पिछले दस वर्षों के दौरान दिवालिया न्यायनिर्णीत किया गया है? यदि ऐसा है तो व्यौरा है:
15. क्या आवेदक किन्हीं वृत्तिक निकायों या किसी बीमा विनियामक द्वारा अनुशासित किया गया है? यदि ऐसा है तो व्यौरा है:

**प्रमाणनः:**

मैं इसके द्वारा प्रमाणित करता हूँ कि इस प्ररूप में दी गई आनकारी पूर्ण, सत्य और सही है और भारतीय बीमाकिक सोसायटी द्वारा जारी किया गया व्यवसाय प्रमाणपत्र भी संलग्न है।

**स्थानः:**

**तारीखः** बीमांकक के हस्ताक्षर

बीमाकर्ता के प्रधान अधिकारी द्वारा प्रतिहस्ताक्षरित

एन. रंगाचारी, अध्यक्ष

[सं. विज्ञापन-3/4/असाधारण/161/2000]

### **INSURANCE REGULATORY AND DEVELOPMENT AUTHORITY**

#### **NOTIFICATION**

New Delhi, the 14th July, 2000

#### **Insurance Regulatory and Development Authority (Appointed Actuary) Regulations, 2000**

##### **F. No. IRDA/Reg./7/2000.—**

In exercise of the powers conferred by clause (zd) of sub-section (2) of section 114A of the Insurance Act, 1938 (4 of 1938), the Insurance Regulatory and Development Authority, in consultation with the Insurance Advisory Committee, hereby makes the following regulations, namely:—

**1. Short title and commencement.**—(1) These regulations may be called the Insurance Regulatory and Development Authority (Appointed Actuary) Regulations, 2000.

(2) They shall come into force from the date of their publication in the Official Gazette.

**2. Definitions.**—(1) In these regulations, unless the context otherwise requires ----

- (a) "Act" means the Insurance Act, 1938 (4 of 1938);
- (b) "Actuarial Society of India" means Actuarial Society of India registered under Societies Registration Act 1860; (21 of 1860);
- (c) "Appointed Actuary" means an actuary mentioned in Regulation 3 below;
- (d) "Authority" means the Insurance Regulatory and Development Authority established under sub-section (1) of section 3 of the Insurance Regulatory and Development Authority Act, 1999 (41 of 1999);
- (e) "Professional Standard" means the standard of practice specified, with the concurrence of the Authority, by the Actuarial Society of India by issue of guidance notes to its members.

(2) All words and expressions used herein and not defined herein but defined in the Insurance Act, 1938 (4 of 1938), or in the Insurance Regulatory and Development Authority Act, 1999 (41 of 1999), shall have the meanings respectively assigned to them in those Acts.

**3. Procedure for Appointment of an Appointed Actuary.**—(1) An insurer registered to carry on insurance business in India shall, subject to sub-regulation (2), appoint an actuary, who shall be known as the 'Appointed Actuary' for the purposes of the Act.

(2) A person shall be eligible to be appointed as an appointed actuary for an insurer, if he or she shall be-----

- (i) ordinarily resident in India;
- (ii) a Fellow Member of the Actuarial Society of India;

- (iii) an employee of the life insurer, in case of life insurance business;
- (iv) an employee of the insurer or a consulting actuary, in case of general insurance business;
- (iv) a person who has not committed any breach of professional conduct;
- (v) a person against whom no disciplinary action by the Actuarial Society of India or any other actuarial professional body is pending;
- (vi) not an appointed actuary of another insurer;
- (vii) a person who possesses a Certificate of Practice issued by the Actuarial Society of India; and
- (viii) not over the age of seventy years.

(3) An insurer shall seek the approval of the Authority for the appointment of appointed actuary, submitting the application in Form IRDA-AA-1.

(4) The Authority shall, within thirty days from the date of receipt of application, either accept or reject the same:

Provided that before the rejecting the application, the Authority shall give an opportunity of being heard to the insurer.

(5) If an insurer does not receive approval within thirty days of the receipt of such application by the Authority, the insurer shall deem that the approval has been granted by the Authority.

(6) An insurer, who is unable to appoint an appointed actuary in accordance with sub-regulation (2), shall make an application to the Authority in writing for relaxation of one or more conditions mentioned in sub-regulation 2.

(7) The Authority shall, on receipt of the application referred to in sub-regulation (6), communicate its decision to the insurer within thirty days of receipt of such application.

(8) The appointment of an appointed actuary shall take effect from the date of approval by the Authority.

**4. Effect of rejection of the application.**—The insurer shall, within four weeks of rejection of the application referred to under regulation 3, apply to the Authority for the appointment of a person other than the one rejected by it under regulation 3 as an appointed actuary, for the purposes of these regulations.

**5. Life Insurer not to carry on business of insurance without an appointed actuary.**— A life insurer shall not carry on business of insurance without an appointed actuary.

**6. Cessation of Appointment of Appointed Actuary.**—(1) An appointed actuary shall cease to be so, if he or she has been given notice of withdrawal of approval by the Authority on the following grounds:-

- (a) that he or she ceases to be eligible in accordance with sub-regulation (2) of regulation (3), or;
- (b) that he or she has, in the opinion of the Authority, failed to perform adequately and properly the duties and obligations of an appointed actuary under these regulations.

(2) The Authority shall give an appointed actuary a reasonable opportunity of being heard, if he or she has been given a notice of withdrawal of approval by it.

(3) If a person ceases to be an appointed actuary of an insurer otherwise than on the grounds mentioned in sub-regulation (1), the insurer and the appointed actuary shall intimate the Authority the reasons therefor within fifteen days of such a cessation.

**7. Powers of Appointed Actuary.**—(1) An appointed actuary shall have access to all information or documents in possession, or under control, of the insurer if such access is necessary for the proper and effective performance of the functions and duties of the appointed actuary.

(2) The appointed actuary may seek any information for the purpose of sub-regulation (1) of this regulation from any officer or employee of the insurer.

(3) The appointed actuary shall be entitled, --

- (a) to attend all meetings of the management including the directors of the insurer;

**(b) to speak and discuss on any matter, at such meeting,--**

- (i) that relates to the actuarial advice given to the directors;
- (ii) that may affect the solvency of the insurer;
- (iii) that may affect the ability of the insurer to meet the reasonable expectations of policyholders; or
- (iv) on which actuarial advice is necessary.

**(c) to attend,--**

- (i) any meeting of the shareholders or the policyholders of the insurer; or
- (ii) any other meeting of members of the insurer at which the insurer's annual accounts or financial statements are to be considered or at which any matter in connection with the appointed actuary's duties is discussed.

**8. Duties and obligations.—** In particular and without prejudice to the generality of the foregoing matters, and in the interests of the insurance industry and the policyholders, the duties and obligations of an appointed actuary of an insurer shall include:—

(a) rendering actuarial advice to the management of the insurer, in particular in the areas of product design and pricing, insurance contract wording, investments and reinsurance;

(b) ensuring the solvency of the insurer at all times;

(c) complying with the provisions of the section 64V of the Act in regard to certification of the assets and liabilities that have been valued in the manner required under the said section;

(d) complying with the provisions of the section 64 VA of the Act in regard to maintenance of required solvency margin in the manner required under the said section;

(e) drawing the attention of management of the insurer, to any matter on which he or she thinks that action is required to be taken by the insurer to avoid--

- (i) any contravention of the Act; or
- (ii) prejudice to the interests of policyholders;

(f) complying with the Authority's directions from time to time;

(g) in the case of the insurer carrying on life insurance business,—

(i) to certify the actuarial report and abstract and other returns as required under section 13 of the Act;

(ii) to comply with the provisions of section 21 of the Act in regard to further information required by the Authority;

(iii) to comply with the provisions of section 40-B of the Act in regard to the bases of premium;

(iv) to comply with the provisions of the section 112 of the Act in regard to recommendation of interim bonus or bonuses payable by life insurer to policyholders whose policies mature for payment by reason of death or otherwise during the inter-valuation period;

(v) to ensure that all the requisite records have been made available to him or her for the purpose of conducting actuarial valuation of liabilities and assets of the insurer;

(vi) to ensure that the premium rates of the insurance products are fair;

(vii) to certify that the mathematical reserves have been determined taking into account the guidance notes issued by the Actuarial Society of India and any directions given by the Authority;

(viii) to ensure that the policyholders' reasonable expectations have been considered in the matter of valuation of liabilities and distribution of surplus to the participating policyholders who are entitled for a share of surplus;

(ix) to submit the actuarial advice in the interests of the insurance industry and the policyholders;

(h) in the case of the insurer carrying on general insurance business to ensure, --

(i) that the rates are fair in respect of those contracts that are governed by the insurer's in-house tariff;

(ii) that the actuarial principles, in the determination of liabilities, have been used in the calculation of reserves for incurred but not reported claims (IBNR) and other reserves where actuarial advice is sought by the Authority;

(i) informing the Authority in writing of his or her opinion, within a reasonable time, whether,—

(i) the insurer has contravened the Act or any other Acts;

(ii) the contravention is of such a nature that it may affect significantly the interests of the owners or beneficiaries of policies issued by the insurer;

(iii) the directors of the insurer have failed to take such action as is reasonably necessary to enable him to exercise his or her duties and obligations under this regulation; or

(iv) an officer or employee of the insurer has engaged in conduct calculated to prevent him or her exercising his or her duties and obligations under this regulation.

**9. Absolute Privilege of Appointed Actuary.**--(1) An appointed actuary shall enjoy absolute privilege to make any statement, oral or written, for the purpose of the performance of his functions as appointed actuary. This is in addition to any other privilege conferred upon an appointed actuary under any other Regulations.

(2) Any provision of the letter of appointment of the appointed actuary, which restricts or prevents his duties, obligations and privileges under these regulations, shall be of no effect.

**10. Applicability to reinsurance business.**-- These regulations shall apply to reinsurers carrying on reinsurance business in India.

Form IRDA-AA-1  
Particulars of Appointed Actuary

1. Name of Insurer:

2. Name of Actuary:

3. Residential Address with telephone number:[Residential addresses during the last five years have to be furnished]

4. Official Address with telephone number:

5. Date of Appointment:

6. Date & Place of Birth

7. Annual Remuneration & Fringe Benefits

8. Shareholding (in per cent. of share holding) in the Indian Insurance Company (for which the applicant is the Appointed Actuary) and also in the promoter's companies, if any.

9. Professional Qualifications:

10. Working Experience (give also particulars of previous experience as Appointed Actuary in India or elsewhere)

11. Achievements and special positions held presently or previously:

12. Names, countries of incorporation, addresses and principal activities of any other firms or companies in which the applicant was a director, partner, proprietor or employee:

13. Particulars of any criminal conviction for offences in India or elsewhere:

14. Has the applicant been adjudicated bankrupt during the last ten years? If so, give details:

15. Has the applicant been disciplined by any professional bodies or any insurance regulator? If so give details:

#### Certification:

I hereby certify that the information given in this form is complete, true and correct, and also enclose the Certificate of Practice issued by the Actuarial Society of India.

### Place:

Date: \_\_\_\_\_ Signature of Actuary.

Countersigned by the principal officer of the Insurer:

N. RANGACHARY, Chairperson

[No. Advt.-3/4/Exty/161/2000]